कस्बे के पास बनी मुंडेर में वह पत्थर भला कैसे आया

लेखनः हाय रुचिलस, चित्रः मामेरु फ्युनाई
भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

कस्बे के पास बनी मुंडेर में
वह पत्थर भला कैसे आया
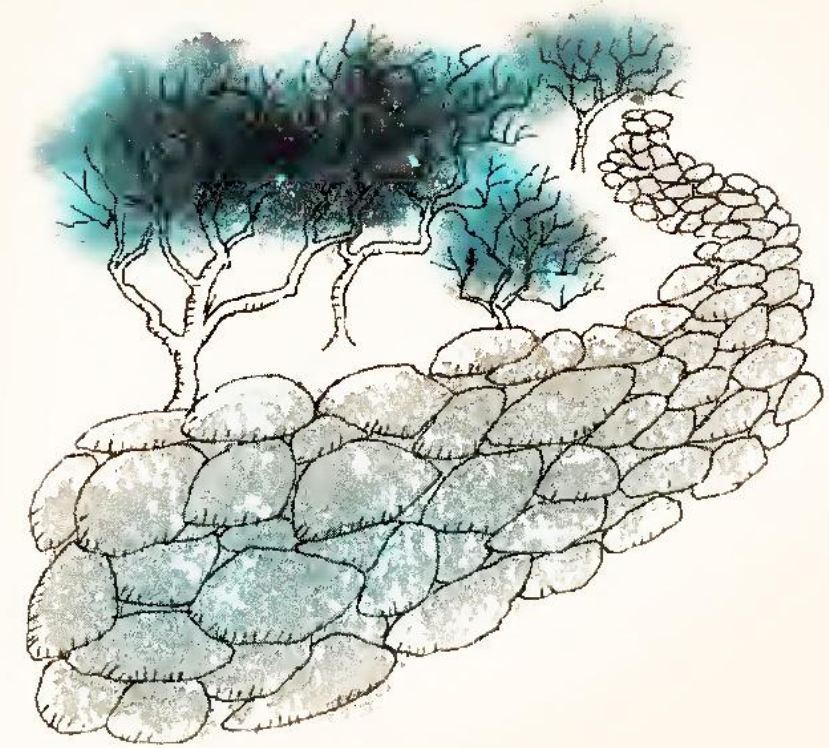
कस्बे के पास बनी मुंडेर में
वह पत्थर भला कैसे आया

क्या तुम्हें प्रकृति की सैर करते हुए कभी कोई पत्थर या कंकड़ मिला है? क्या तुमने कभी सोचा कि वह पत्थर कहाँ से आया होगा? क्या वह आज से लाखों साल पहले भी पत्थर ही था? जिस जगह आज वह पड़ा है, वहाँ कैसे आया होगा? तीस लाख वर्ष पहले सीपियों के एक ढ़ेर को आज के उस सुरमई पत्थर में बदलने की मनमोहक कहानी में लेखक किसान की पत्थरों से बनी मुंडेर में चिने जाने की बात भी सुनाते हैं। भाषा और चित्रों का काव्यात्मक प्रवाह इस किताब को प्रकृति के बारे में एक उम्दा पुस्तक में तब्दील करते हैं।

कस्बे के पास बनी मुंडेर में वह पत्थर भला कैसे आया

लेखनः हाय रुचिलस

चित्रः मामेरु फ्युनाई

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा
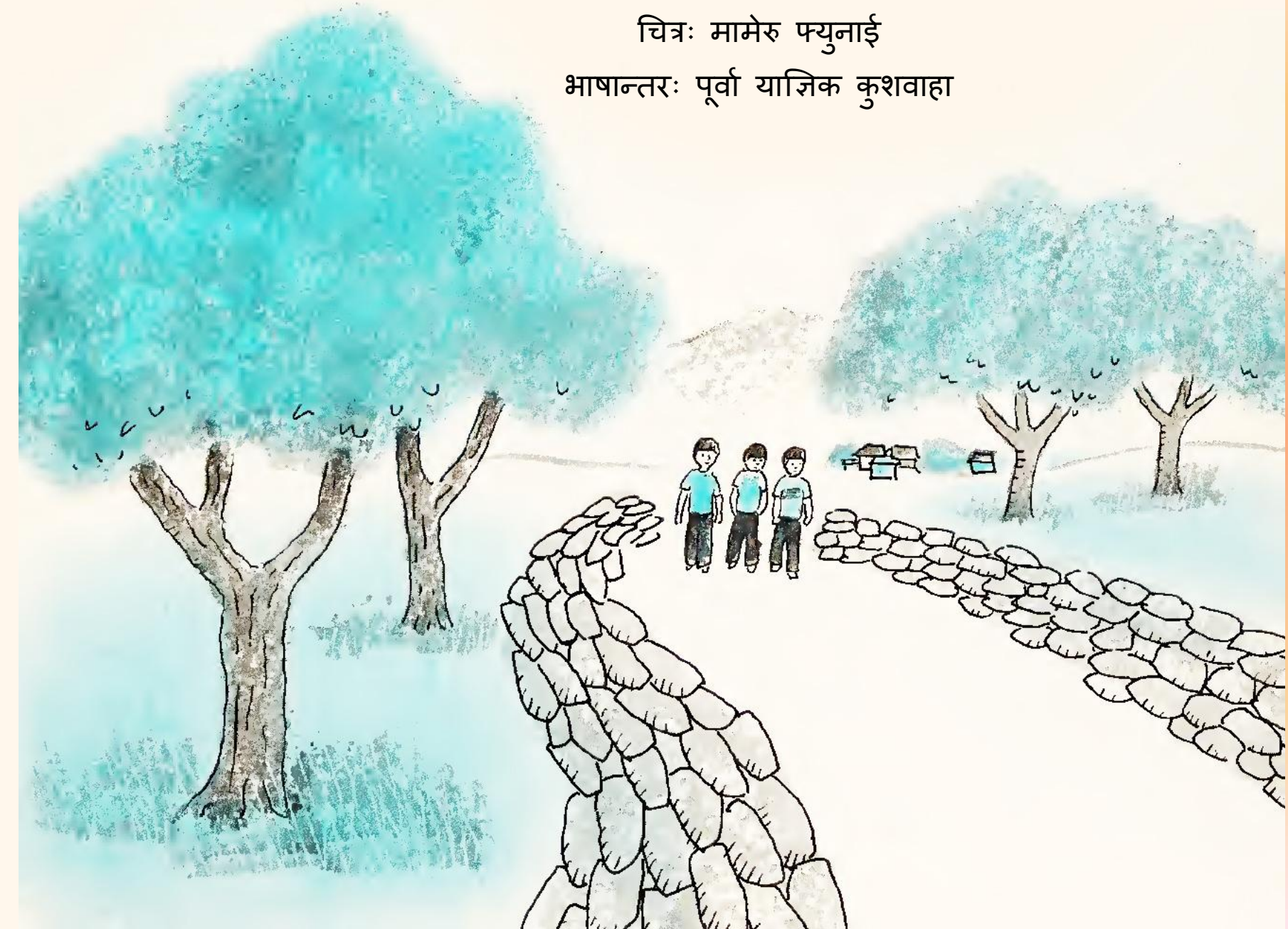
तुम्हारे कस्बे में जंगल के पास वाली सड़क पर, एक खेत के किनारे पत्थरों वाली जो मुंडेर है उसमें एक सुरमई पत्थर चिना हुआ है। क्या वह हमेशा से ही वहाँ, मुंडेर में जड़ा हुआ था? या किसीने उसे लाकर वहाँ रखा? यह पत्थर भला पत्थर कैसे बना?
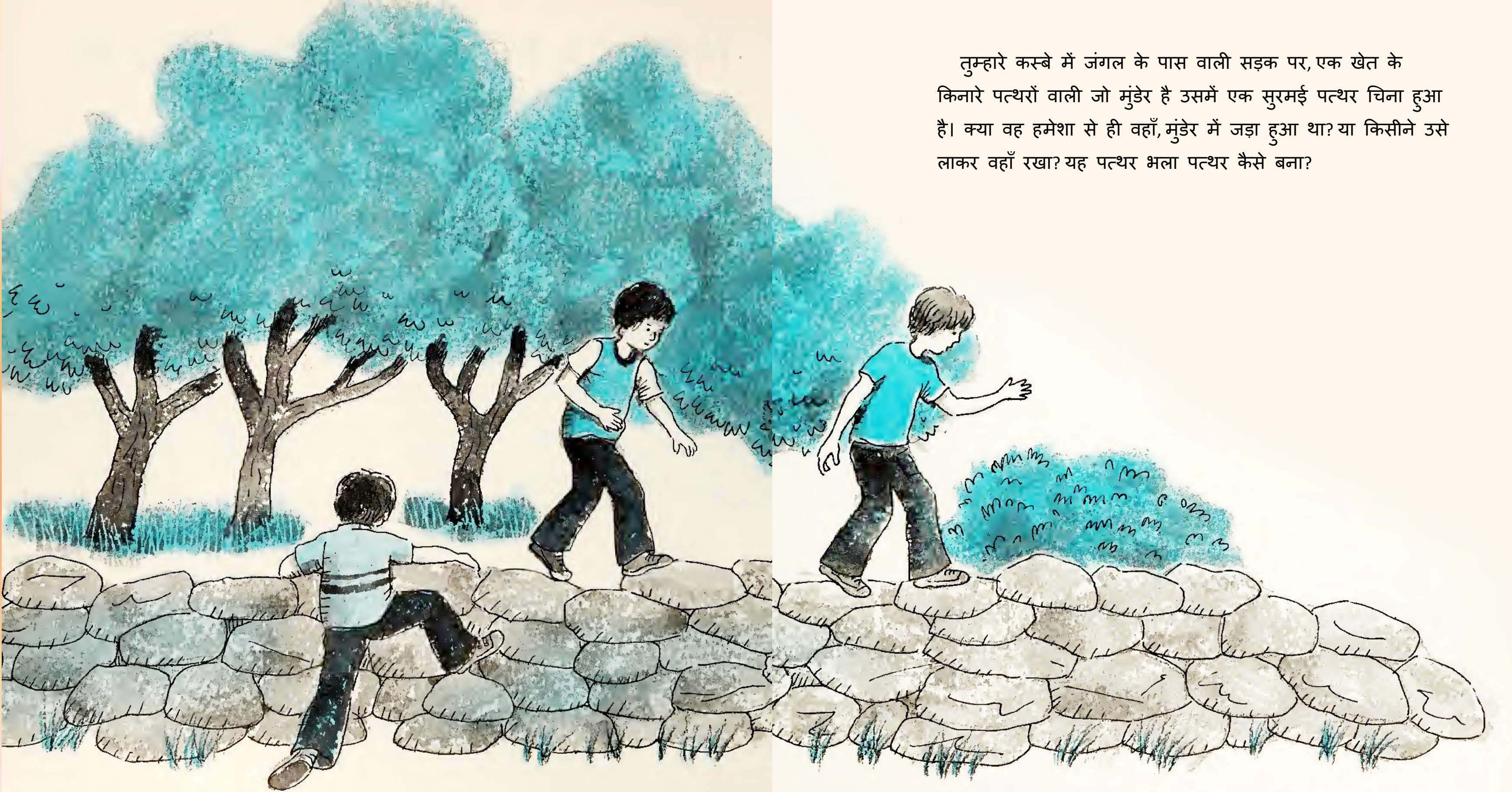
हमारे इस सुरमई पत्थर की कहानी सैकड़ों सालों से भी पहले, हज़ारों सालों से भी पहले, लाखों सालों से भी पहले, शुरू होती है। कहानी शुरू होती है, बीस या तीस लाख वर्ष पहले।

उस समय समुद्र जीवों से अटा पड़ा था। कई तरह की मछलियाँ थीं। छोटे व बड़े जीव थे, जो समुद्र के तल में रेंगा करते थे। उस वक्त हमारा पत्थर, पत्थर नहीं था। वह दरअसल खोल/सीप वाले जीव थे, जो समुद्र के तल में रहा करते थे।
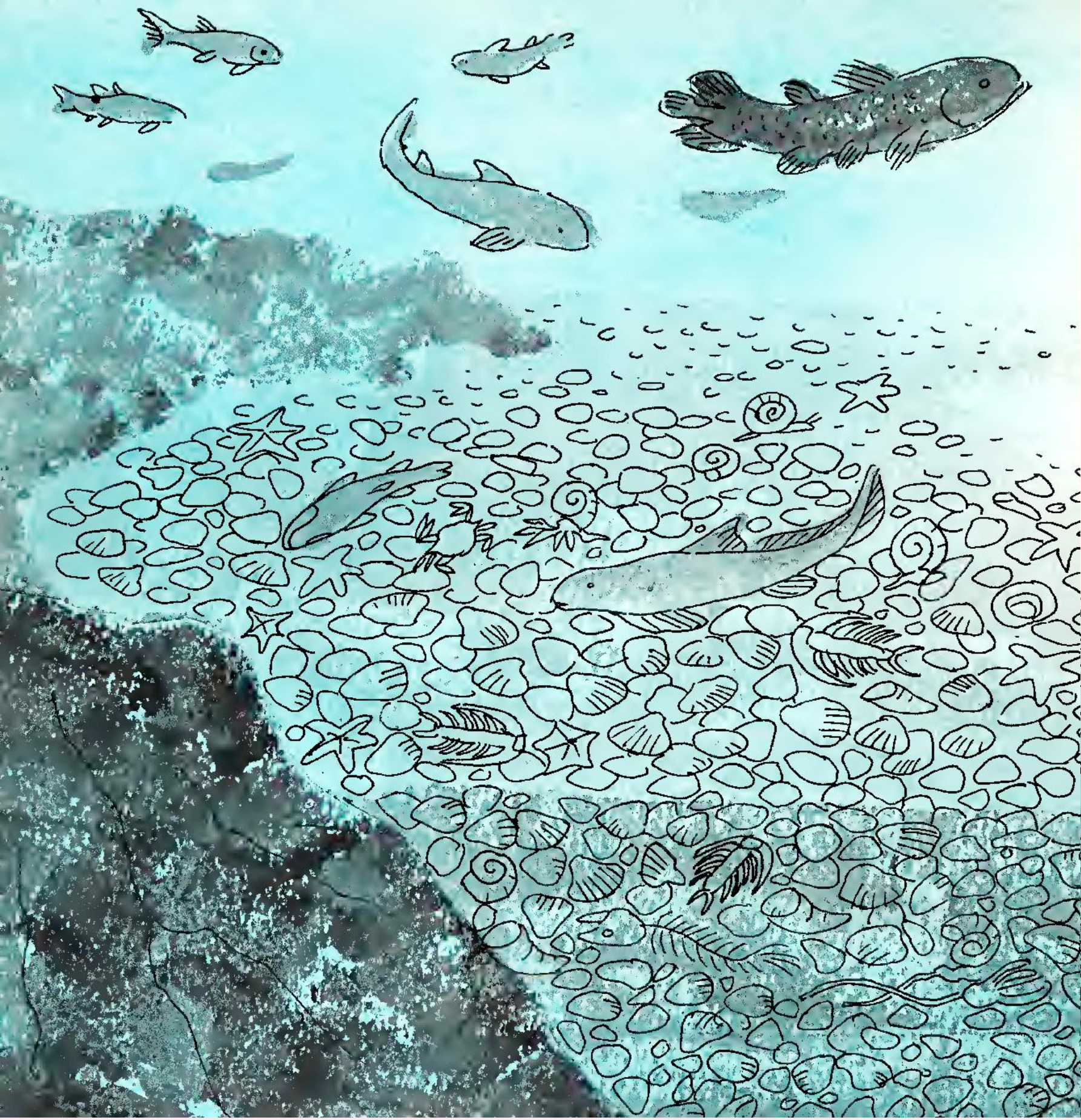
जब खोल वाले जीव मरते उनके खोल समुद्र तल में जा गिरते। और सालों-साल वहीं पड़े रहते। तब खोल वाले नए जीव पैदा होते, बढ़ते और, अंततः मरते। उनके खोल भी पहले वाली खोलों के ऊपर जा गिरते।

कई-कई सालों के बाद खोलों, बालू, कीचड़ और शायद छोटे कंकड़ों की एक मोटी परत बन जाती। आगे के सालों में यह परत और-और मोटी होती जाती।

यह परत पानी से ढ़की रहती। नदियों से समुद्र में आए पानी के साथ कीचड़, बालू, और कंकड़ भी आते। यह सब भी उसी परत पर जमता जाता। कीचड़, बालू, कंकड़ और खोलों की नई सतहें साल दर साल, शताब्दी दर शताब्दी मोटी होती जाती।

ये परतें जमा होते-होते सैकड़ों या हज़ारों फीट मोटी बन जाती। अनेकानेक खोलों, बालू, कीचड़ और केकड़ों का वज़न, और उस पर पानी का वज़न इन सतहों को दबाता। उन्हें कठोर चट्टानों में बदल देता। हमारा सुरमई पत्थर का रंग सफेद सीपियों के बावजूद सुरमई इसलिए है क्योंकि उसमें सीपियों के साथ बालू, कीचड़ और कंकड़ भी मिले हुए हैं।
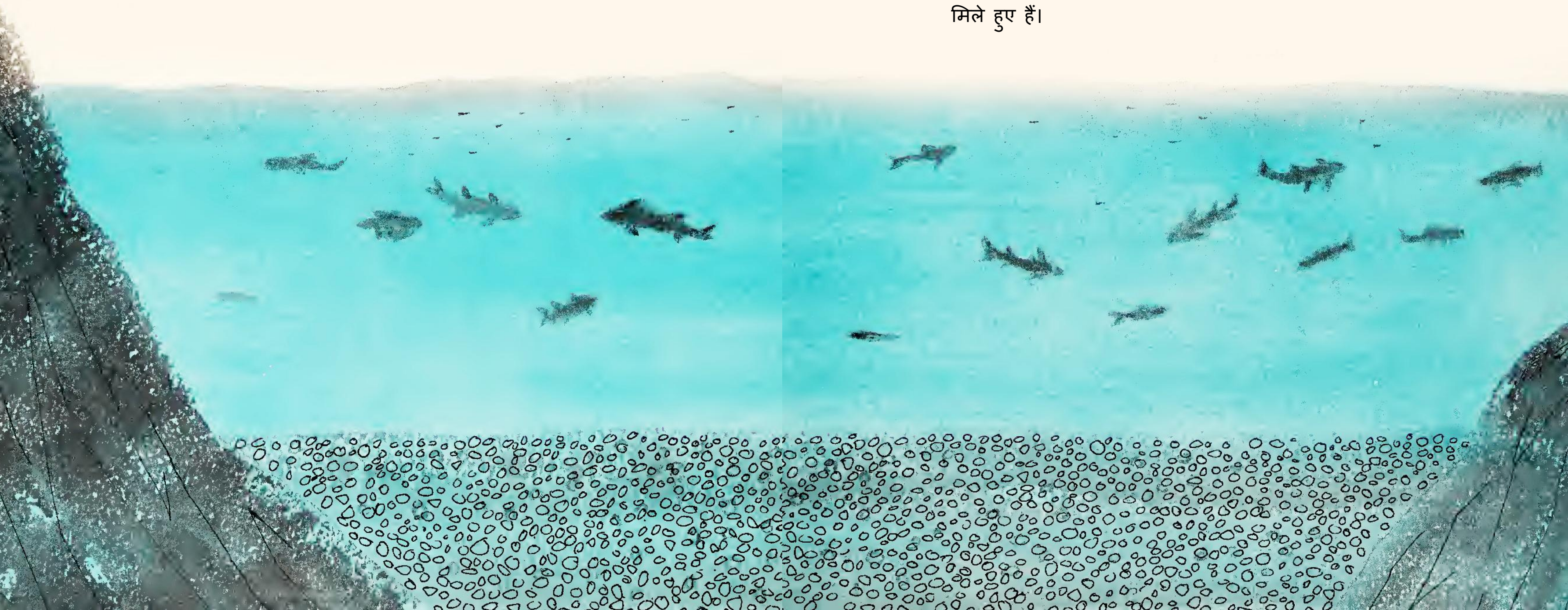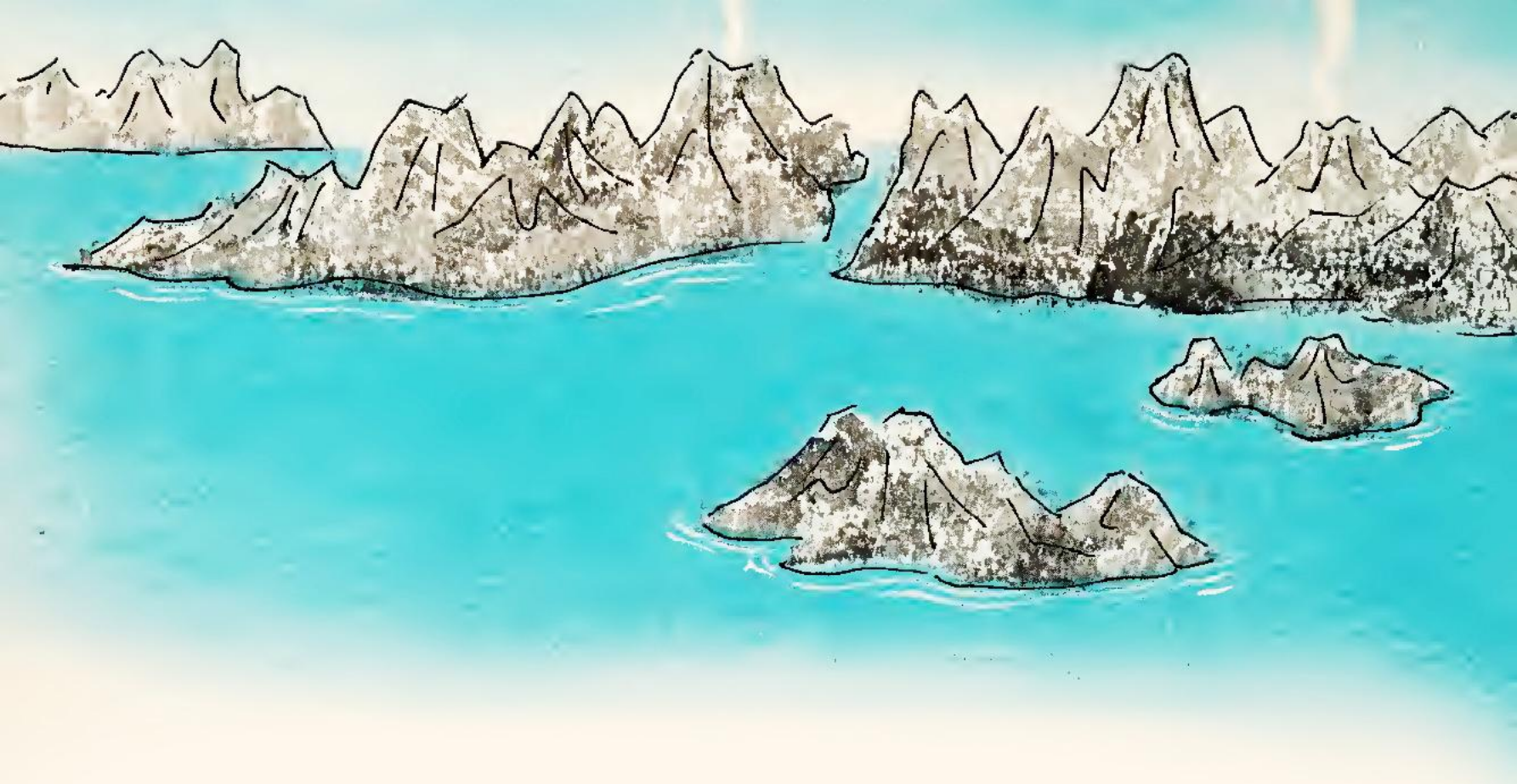
तो यह सुरमई पत्थर समुद्र के तल से निकल कर सड़क के पास वाले खेत की मुंडेर में कैसे आया? हुआ यह कि लाखों-लाख सालों और समय के गुज़रने के साथ धरती और समुद्र का आकार भी बदला। कुछ जगहों पर समुद्र के नीचे की धरती ऊपर उठने लगी और धीरे-धीरे ज़मीन में तब्दील होने लगी। वह उठते-उठते इतनी ऊपर हो गई कि वह ऊँचे पहाड़ों में बदल गई। ऐसे पहाड़ों में जो मील भर से भी अधिक ऊँचे थे। वह सुरमई पत्थर अब पहाड़ की चोटी का हिस्सा था।
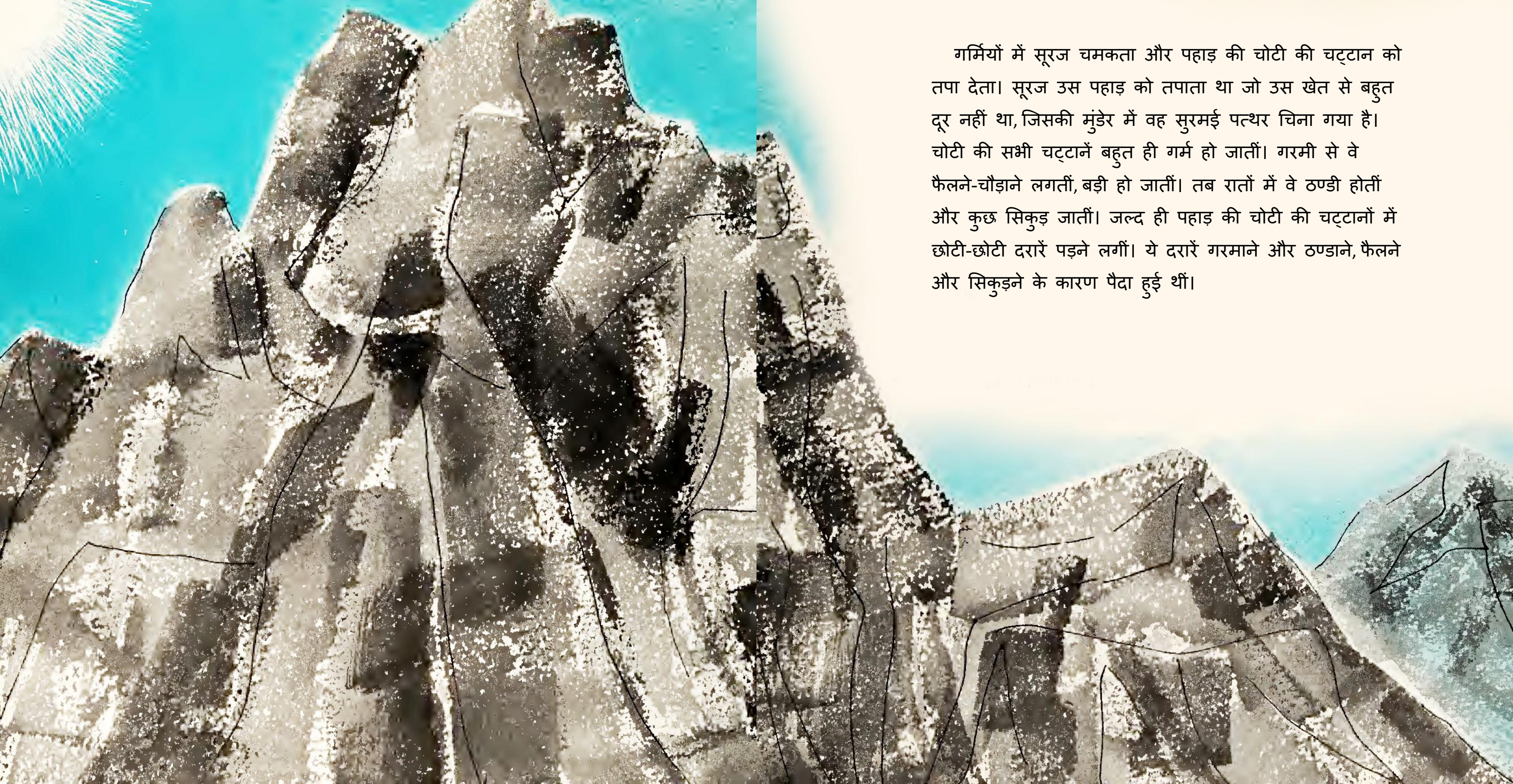
गर्मियों में सूरज चमकता और पहाड़ की चोटी की चट्टान को तपा देता। सूरज उस पहाड़ को तपाता था जो उस खेत से बहुत दूर नहीं था, जिसकी मुंडेर में वह सुरमई पत्थर चिना गया है। चोटी की सभी चट्टानें बहुत ही गर्म हो जातीं। गरमी से वे फैलने-चौड़ाने लगतीं, बड़ी हो जातीं। तब रातों में वे ठण्डी होतीं और कुछ सिकुड़ जातीं। जल्द ही पहाड़ की चोटी की चट्टानों में छोटी-छोटी दरारें पड़ने लगीं। ये दरारें गरमाने और ठण्डाने, फैलने और सिकुड़ने के कारण पैदा हुई थीं।

यों कई सालों बाद पहाड़ की चोटी की ठोस चट्टानें पानी के जमने से, दिन ब दिन, साल दर साल फैलने और सिकुड़ने से तड़क कर कई छोटे-बड़े टुकड़ों में टूट गईं।

दिन ब दिन, साल दर साल, तपने और ठण्डाने के कारण पड़ी दरारें चौड़ी और लम्बी होती गईं। तब बरसात का पानी बह कर उनमें भी जाने लगा। सर्दियों में दरारों में भरा पानी जमकर बर्फ बनने लगा।

जब पानी जमता है, वह फैल जाता है। जमा हुआ पानी काँच की बोतलों को या स्टील के पाइपों को, या किसी बड़ी चट्टान तक को फोड़ सकता है।
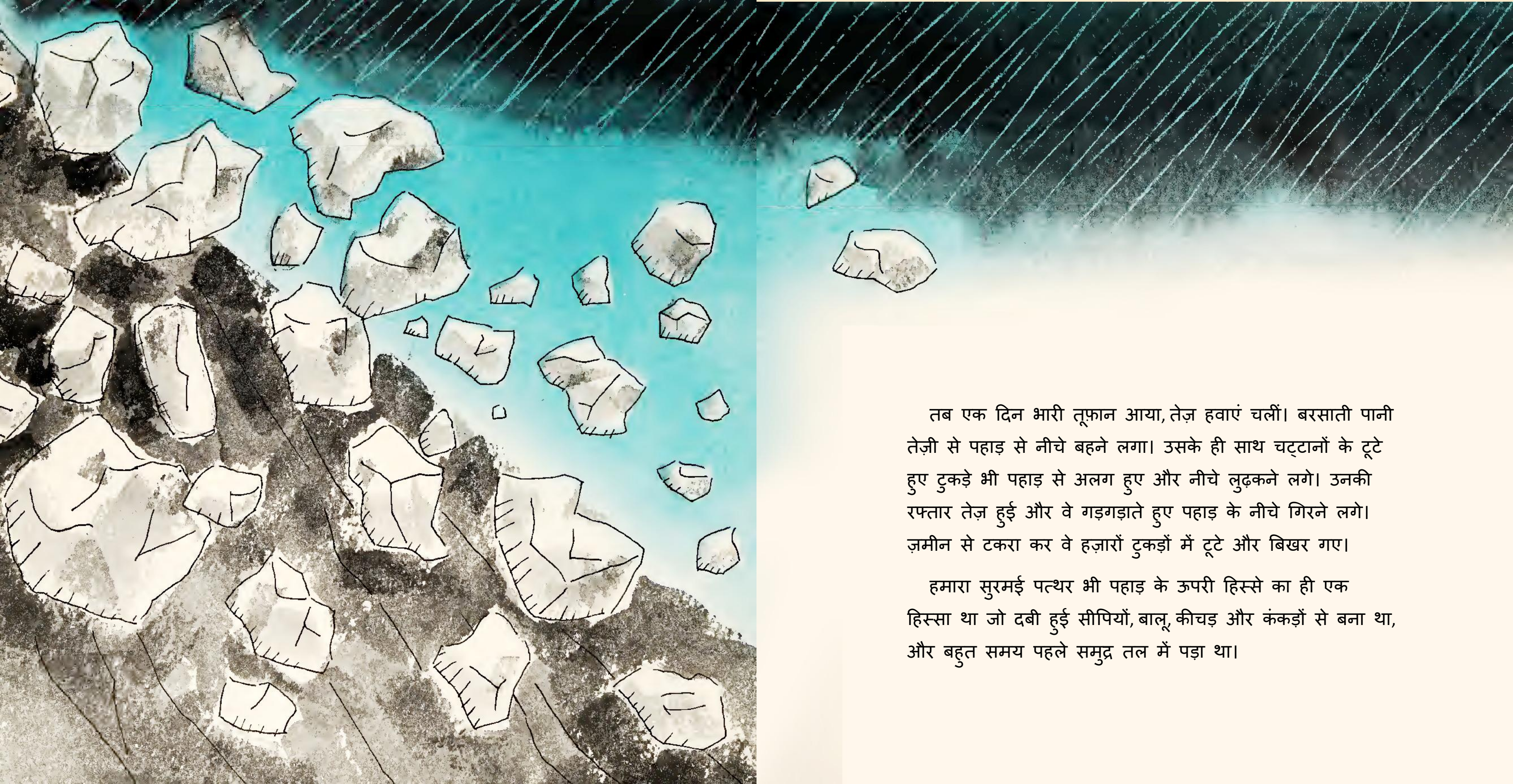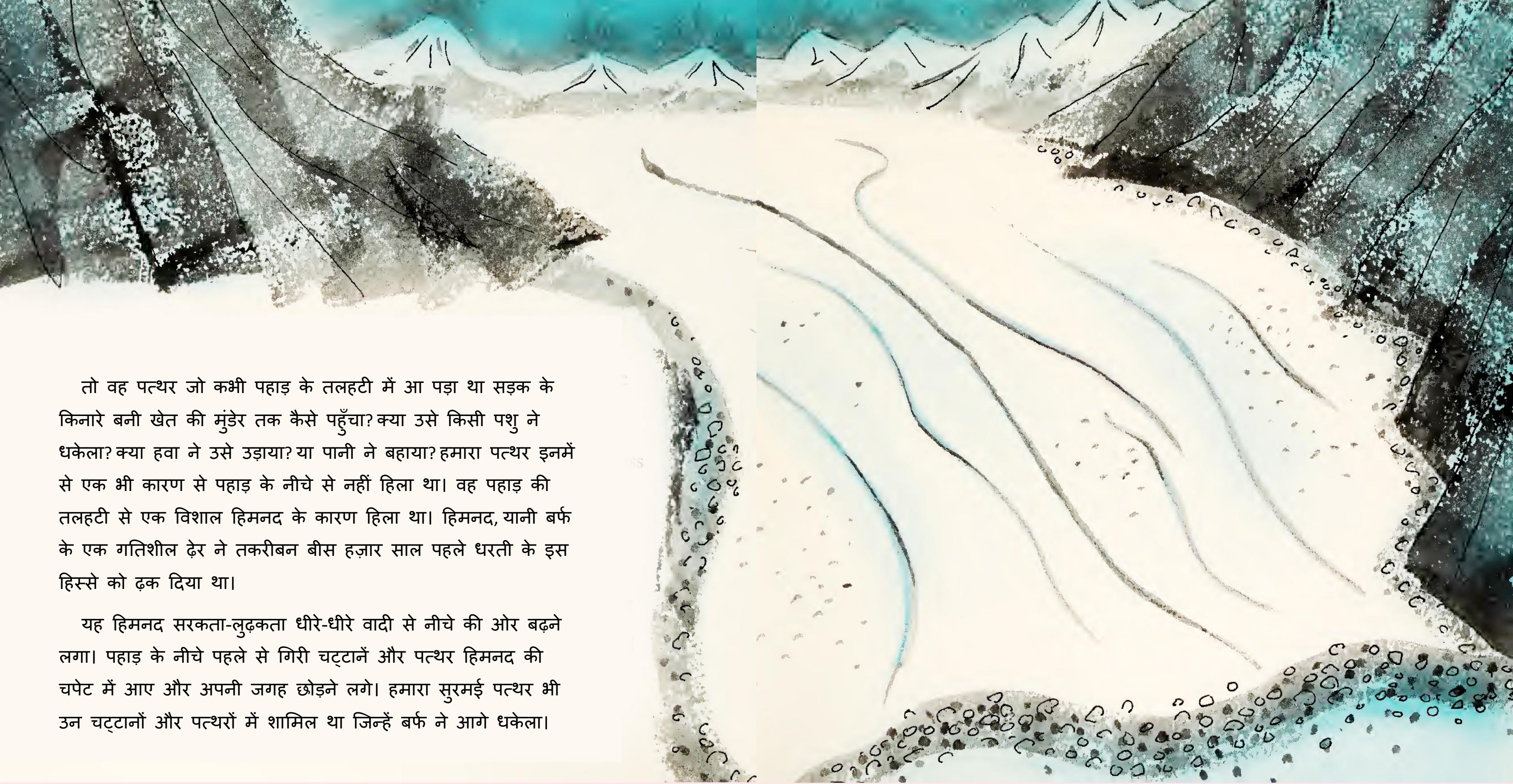
तब एक दिन भारी तूफ़ान आया, तेज़ हवाएं चलीं। बरसाती पानी तेज़ी से पहाड़ से नीचे बहने लगा। उसके ही साथ चट्टानों के टूटे हुए टुकड़े भी पहाड़ से अलग हुए और नीचे लुढ़कने लगे। उनकी रफ्तार तेज़ हुई और वे गड़गड़ाते हुए पहाड़ के नीचे गिरने लगे। ज़मीन से टकरा कर वे हज़ारों टुकड़ों में टूटे और बिखर गए।

हमारा सुरमई पत्थर भी पहाड़ के ऊपरी हिस्से का ही एक हिस्सा था जो दबी हुई सीपियों, बालू, कीचड़ और कंकड़ों से बना था, और बहुत समय पहले समुद्र तल में पड़ा था।

तो वह पत्थर जो कभी पहाड़ के तलहटी में आ पड़ा था सड़क के किनारे बनी खेत की मुंडेर तक कैसे पहुँचा? क्या उसे किसी पशु ने धकेला? क्या हवा ने उसे उड़ाया? या पानी ने बहाया? हमारा पत्थर इनमें से एक भी कारण से पहाड़ के नीचे से नहीं हिला था। वह पहाड़ की तलहटी से एक विशाल हिमनद के कारण हिला था। हिमनद, यानी बर्फ के एक गतिशील ढ़ेर ने तकरीबन बीस हज़ार साल पहले धरती के इस हिस्से को ढ़क दिया था।

यह हिमनद सरकता-लुढ़कता धीरे-धीरे वादी से नीचे की ओर बढ़ने लगा। पहाड़ के नीचे पहले से गिरी चट्टानें और पत्थर हिमनद की चपेट में आए और अपनी जगह छोड़ने लगे। हमारा सुरमई पत्थर भी उन चट्टानों और पत्थरों में शामिल था जिन्हें बर्फ ने आगे धकेला।

कुछ समय बाद, शायद सौ साल बाद, या फिर हज़ार साल बाद वह सुरमई पत्थर हिमनद के सामने की ओर आ पहुँचा। एक दिन सुरमई पत्थर के गिर्द जमी हुई बर्फ पिघली और पत्थर बर्फीले पानी में झपाक से गिरा, थोड़ा लुढ़का और तब उस रेत की ढ़ेरी के ऊपर जा टिका, जिसे भी पानी ने ही आगे धकियाया था।
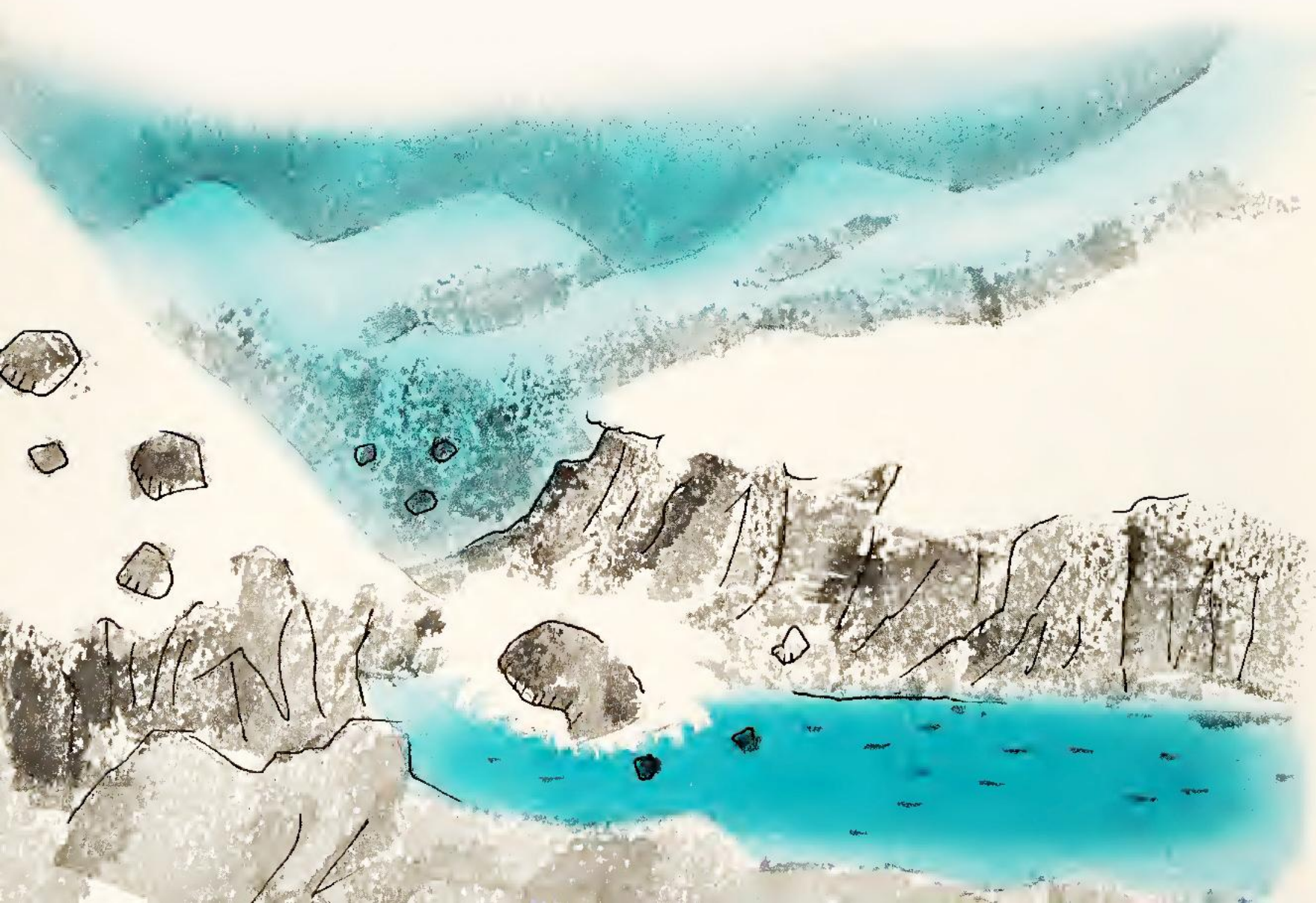
कई साल गुज़रे। एक बार फिर गर्मियों का मौसम आया और हमारे पत्थर के आस-पास घास उग आई। उस पर पत्तियाँ गिरने लगीं। हवा से आई धूल ने पत्थर को ढ़क दिया। यों वह मिट्टी के नीचे दब गया।
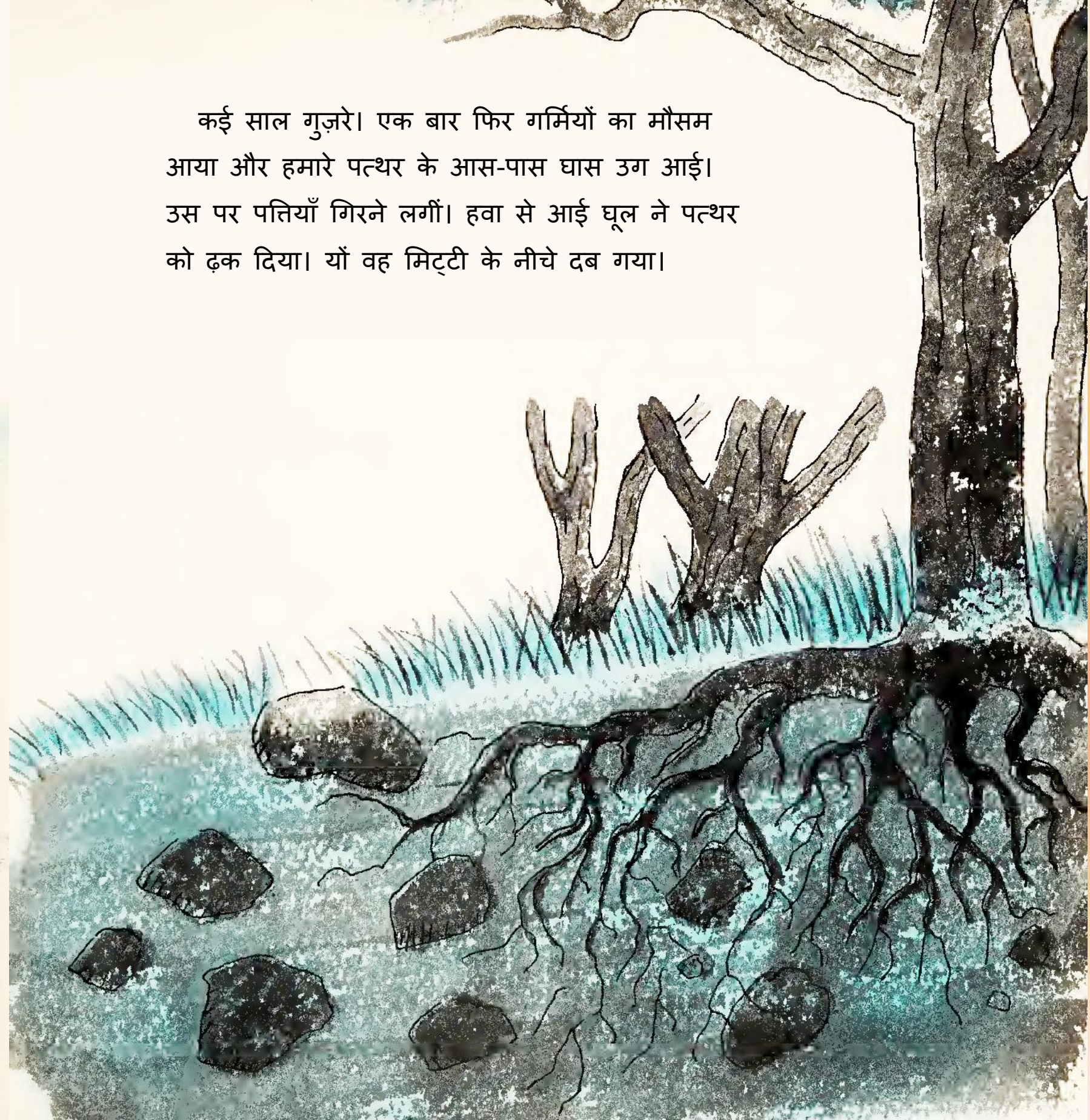
उस ज़मीन पर लोग आकर बसे। उन्होंने इलाके के पेड़ काटे और जंगल को साफ किया, ताकि वे खेत बना सकें। अपने परिवारों के लिए अनाज उगा सकें। एक दिन एक किसान का हल उस सुरमई पत्थर से टकराया। किसान ने पत्थर खोद कर निकाला, उसे उठाया और दूसरे पत्थरों के साथ करीने से खेत के एक कोने में रख दिया और फिर से हल चलाने लगा।

अगली सर्दियों में ज़मीन पर बर्फ जमा हो गई। उस बर्फ पर आसानी से स्लेज गाड़ी सरक सकती थी। एक दिन किसान स्लेज को अपने घोड़े से घसीटता खेत पर आया। उसकी मदद करने उसके दो बेटे भी आए। उन्होंने पत्थर की ढ़ेरी से एक-एक कर पत्थर उठा कर स्लेज में रखे, ताकि खेत की मुंडेर बनाई जा सके। अब क्योंकि सारे पत्थर हट चुके थे, किसान आसानी से हल चला सकता था।
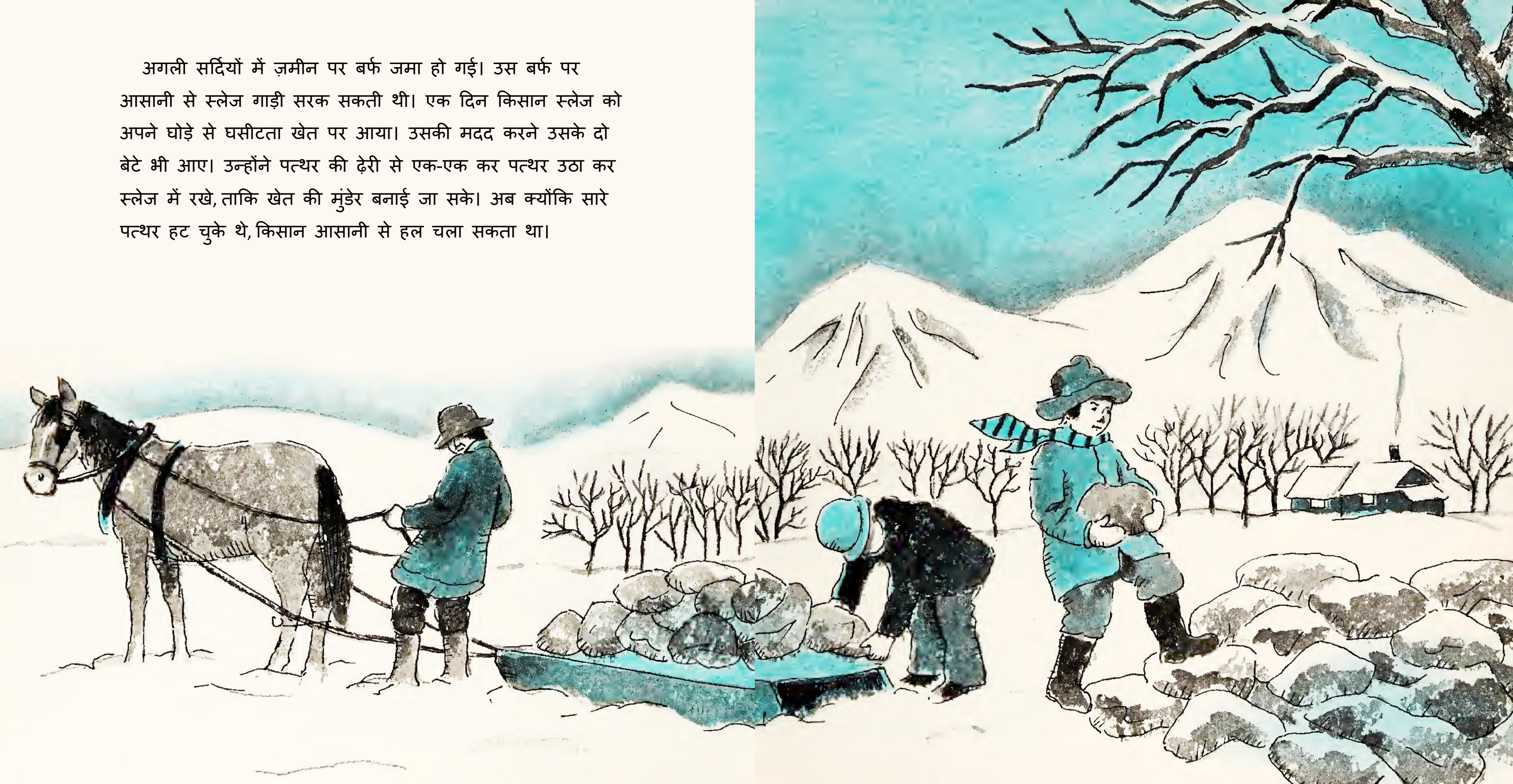
इस तरह वह सुरमई पत्थर तुम्हारे कस्बे की सड़क के पास वाले खेत की मुंडेर में आया।

क्या तुम साचते हो कि हमारे सुरमई पत्थर की कहानी यहीं खत्म हो गई है? कतई नहीं। किसी दिन वह धरती, जहाँ वह मुंडेर बनी हुई है फिर से उठ सकती है और एक पहाड़ बन सकती है, या फिर वह धीरे-धीरे धंस कर समुद्र की नीचे डूब सकती है।

हो सकता है कि वह सुरमई पत्थर तड़क जाए और उसके कंचों के आकार के छोटे-छोटे टुकड़े और बालू के कण बन जाएं। तब बरसात का पानी उन्हें बहा ले जाए, या हवा उन्हें उड़ा दे, या बर्फ धकिया कर आगे ले जाए। पत्थरों, चट्टानों की कहानी तब तक खत्म नहीं होगी? जब तक ज़मीन और समुद्र बदलते रहेंगे। हवा चलती रहेगी और बरसात होती रहेगी। हिमनद आगे बढ़ेंगे और सूरज का ताप पत्थरों में दरार पैदा करता रहेगा।
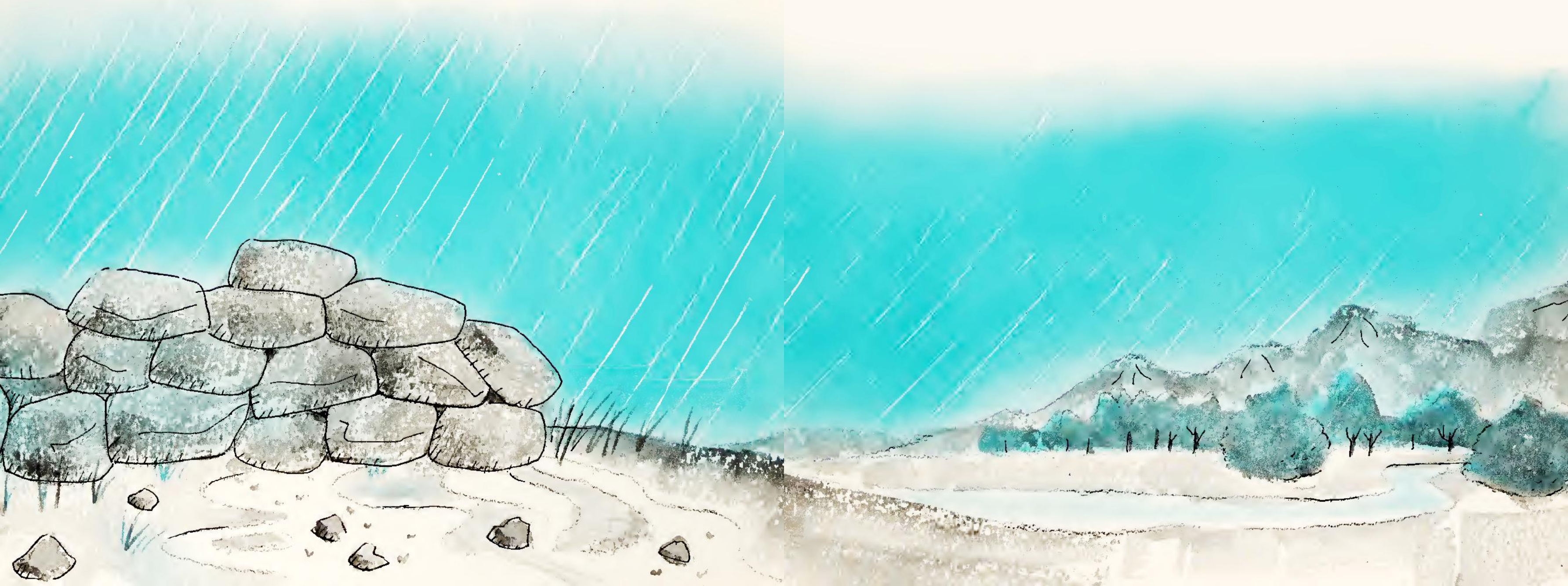
हाय रुचिलस अपनी पुरस्कृत रचना *इन्विटेशन टू इन्वस्टिगेट* के लिए मशहूर हैं, जिसे उन्होंने पॉल ब्रैण्डवेहन के साथ लिखी थी। वे *मिस्टर विजर्डस् 400 एक्सपेरिमेंटस्* के लिए भी जाने जाते हैं, जिसके सह-लेखक डॉन हर्बर्ट थे। उन्होंने बच्चों के लिए बीस से अधिक किताबें लिखी हैं। वे न्यू यॉर्क के बुशविक हाई स्कूल में विज्ञान विभाग के अध्यक्ष थे। उन्होंने बच्चों के लिए विज्ञान व पठन सामग्री विकसित करवाई। वे फयरले डिकिन्सन युनिवर्सिटी के एज्युकेशनल मीडिया सेन्टर के, तथा हारकोर्ट बेस एण्ड वर्ल्ड में एज्युकेशनल टेकनोलॉजी के भी निदेशक रहे। अब वे सेवा निवृत्त हैं और अपना समय शिक्षकों व बच्चों के लिए लिखने में बिताते है।

मामोरु फ्युनाई ने होनोलूलू एकेडमी ऑफ आर्टस्, आर्ट इन्स्टिट्यूट ऑफ पिटस्बर्ग तथा क्लीवलैण्ड इन्स्टिट्यूट ऑफ आर्टस् में अध्ययन किया। उन्होंने अनेक बाल पुस्तकों को डिज़ाइन किया व उनके चित्र भी बनाए। इनमें *ग्रीन टर्टल मिस्टरीज़* तथा *बायोग्राफी ऑफ एन ऑक्टोपस* शामिल हैं। वे अपनी पत्नी और दो बेटों के साथ फेयर लॉन, न्यू जर्सी में रहते हैं।